स्वच्छ बस्ती
स्वस्थ नागरिक

परामर्श

- **मदन मोहन उपाध्याय**
  कलेक्टर जबलपुर
- **अब्दुल सलाम खान**
  सलाहकार यूनीसेफ
  महात्मा गांधी राज्य ग्रामीण विकास संस्थान
  जबलपुर
- **जगदीश्वर दयाल सक्सेना**
  कार्यपालन यंत्री, लोक स्वास्थ यांत्रिकी
  जबलपुर
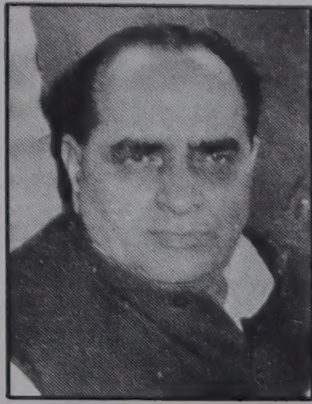
सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि जबलपुर जिले में राजीव गांधी स्वच्छता मिशन के तहत शुष्क शौचालय, सेनिटरी मार्ट, सेनिटरी पार्क आदि का निर्माण किया गया है। इंदिरा आवास योजनाओं के तहत भी बड़े पैमाने पर स्वच्छता कार्यक्रम को गांव-गांव तक पहुंचाया जा रहा है। "सभी के लिए स्वास्थ्य" वर्ष २००० तक देश का एक विस्तृत लक्ष्य है और इसकी प्राप्ति में राजीव गांधी स्वच्छता मिशन एक महत्वपूर्ण एक भूमिका अदा कर सकता है।

जबलपुर जिले में महात्मा गांधी ग्रामीण विकास संस्थान में स्वच्छता पार्क का निर्माण पंचायती राज संस्थाओं के प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करेगा। जिला प्रशासन द्वारा स्वच्छता से जुड़े विषयों पर प्रकाशित यह पुस्तिका निश्चित तौर पर आम नागरिकों तक स्वच्छता के सन्देश को ज्यादा प्रभावी रूप में ले जाने में सहायक सिद्ध होगी।

प्रसन्नता है कि लोक स्वास्थ्य यान्त्रिकीय विभाग द्वारा जबलपुर में स्वच्छता कार्यक्रम में अनुकरणीय कार्य किया गया है।

दिनांक :27 - 5 - 96

राजेन्द्र शुक्ल
मंत्री, म.प्र. शासन
सामान्य प्रशासन विभाग
एवं प्रभारी मंत्री
जिला-जबलपुर
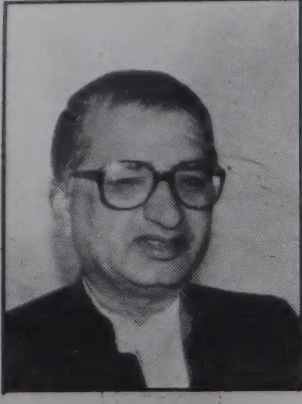
सन्देश

महात्मा गांधी ग्रामीण विकास संस्थान में स्वच्छता पार्क के निर्माण व स्वच्छता इकाइयों के इकजाई प्रदर्शन से पंच, सरपंच, जिला पंचायत व जनपद पंचायतों के सभी सदस्यों को स्वच्छता व उससे जुड़े पहलुओं पर बेहतर जानकारी प्रदाय हो सकेगी। वर्ष २००० तक "सभी के लिए स्वास्थ्य" हेतु लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग कृत संकल्प है। राजीव गांधी स्वच्छता मिशन के माध्यम से प्रदेश के दूरदराज ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ पेय जल उपलब्ध कराने विभाग कृत संकल्पित है। ग्रामीण क्षेत्रों में शुष्क शौचालय के निर्माण से स्वच्छता आंदोलन में तेजी आई है। मुझे विश्वास है कि आगे आने वाले दिनों में यह एक आंदोलन का रूप ले लेगी। शुद्ध पेयजल महिलाओं व बच्चों तथा आम नागरिकों के स्वास्थ्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। पंचायती राज संस्थाओं के प्रशिक्षण के माध्यम से राजीव गांधी स्वच्छता मिशन की विस्तृत जानकारी ग्रामीण स्तर तक पहुंचे और मूर्त रूप ले, ऐसी मैं आशा करता हूं। पुस्तिका के प्रकाशन पर मेरी शुभकामनाएं।

हरवंश सिंह
मंत्री, लोक स्वास्थ्य यां. विभाग
तथा पंचायत एवं ग्रामीण विकास
म. प्र. शासन, भोपाल

भूमिका

प्रदेश में राजीव गांधी स्वच्छता मिशन की स्थापना से ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रमों को प्रभावी दिशा मिली है! व्यक्तिगत स्वच्छता व अच्छा स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यंम से आज यह संदेश व्यापक रूप में पहुंचाया जा रहा है। जबलपुर में महात्मा गांधी राज्य ग्रामीण विकास संस्थान में स्वच्छता इकाई का गठन व यूनिसेफ के माध्यम से पंचायतों के पंच, सरपंचों को पेयजल, ग्रामीण स्वच्छता से जुड़े विषयों के प्रशिक्षण कार्यालयों से ग्रामीण क्षेत्रों में बदलाव आ रहा है। इस पुस्तिका के माध्यम से स्वच्छता से जुड़े विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया है। इससे मिशन के प्रयासों को और बल मिलेगा।

मदन मोहन उपाध्याय

कलेक्टर, जबलपुर

स्वच्छता व स्वस्थता

मानव जीवन अमूल्य है । हम सभी के निरोग रहने के लिये शारीरिक स्वच्छता जरूरी है । सामान्यतः हैजा, टायफाइड, पोलियो और खूनीपेचिश, दस्त जैसे ८० प्रतिशत रोगों का कारण दूषित पेयजल और अपर्याप्त स्वच्छता ही होता है । रोगों में कमी लाने के लिये केवल सुरक्षित जल ही पर्याप्त नहीं है । उक्त रोगों में से अधिकांश रोग मल और मुँह के माध्यम से फैलते है, जिन्हे स्वच्छता संबंधी तौर तरीके अपनाकर नियंत्रित किया जा सकता है । स्वच्छता एक व्यापक विषय है और इसमें व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ साथ हमारे आस पास के परिवेश की स्वच्छता भी सम्मिलित है । यद्यपि खुले में पड़ा मल रोगों को फैलाने का एक प्रमुख कारण है, पर शौचालयों के निर्माण मात्र से ही सदैव गंदगी से संबंधित रोगों को नियंत्रित नहीं किया जा सकता । इसलिये आवश्यक है कि स्वच्छता के साथ साथ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को भी देखा जाये । अनेकों संक्रामक रोगों को थोड़ी सी स्वच्छता के प्रति चेतना से प्रभावी रूप से निपटा जा सकता है । हमारे देश में बाल्य अवस्था में लगभग २८ प्रतिशत बच्चों की मृत्यु उल्टी–दस्त अन्य पानी से फैलने वाले रोगों से इस कारण हो जाती है क्योकि इन रोगों के निदान के सस्ते व सुगम तरीकों की जानकारी ग्रामीण क्षेत्रों में तथा विशेषकर आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को नही है।

"स्वच्छता" शब्द को स्वास्थ्य संबंधी उपायों को परिभाषित करने के लिये प्रयोग किया जाता है । इसके सात अलग अलग रूप इस प्रकार है ।

- पीने के पानी का रखरखाव और उपयोग ।
- बेकार पानी की निकासी ।
- मानव मल का सुरक्षित निपटान ।
- कूड़े कचरे और गोबर का निपटान ।
- घर एवं भोजन की स्वच्छता ।
- व्यक्तिगत सफाई ।
- पर्यावरण स्वच्छता ।

पीने के पानी का सही रखरखाव, स्वच्छ पानी की उपलब्धता व इससे जुड़ी साफ सफाई की बातें फैलाने पर हमारा उद्देश्य काफी हद तक सरल हो जाता है । साफ सफाई से हमारा आशय मोहल्ले के वातावरण, घर की सफाई तथा व्यक्ति के साफ सफाई की आदतों से है । कुपोषण, अशुद्ध पेयजल और बगैर साफ सफाई वाला माहोल छोटे बच्चों में डायरिया (पतले दस्त) से होने वाली मृत्युओं क प्रमुख कारण है । निश्चित तौर पर व्यक्तिगत स्वच्छता व शारीरिक स्वस्थता का गहरा संबंध है जो हमारे जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है ।

नई सोच

मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है जहां ७३ वें सविधान संशोधन के अनुरूप त्रीस्तरीय पंचायती राज्य व्यवस्था सभी ज़िलों में कायम हो चुकी है इसके तहत अब गांवों स्तर तक आम नागरिक उसके विकास से जुड़े निर्णयों में ज्यादा सक्रियता से भागीदारी निभा रहा है । इस परिवर्तन से कल्याणकारी योजनाएं ज्यादा प्रभावी रूप में गांव व कस्बों तक फैली है । इस नई सोच द्वारा लाभकारी योजनाओं से आम आमदी को इस तरह जोड़ा है वह इसे अपना कार्यक्रम समझे और इनमें बढ चढ़ कर हिस्सा ले सके । गांवो में योजनाओं का क्रियान्वयन अब पंचायतों के माध्यम से होने लगा है । ग्राम सभाओं नियमित बैठकों से गांव की स्थानीय प्रथमिकताएं निर्धारित हो रही है व स्थानीय पंचायतो प्रशासन के संगठित प्रयास से समस्याओं का निदान किया जा रहा है ।

इस नई सोच से कार्य शैली में अदभुत परिवर्तन आया है । इसी के साथ साथ आधुनिक तकनीकों जैसे टेलीविजन, टेलीफोन आदि दूरसंचार के माध्यम के गांव स्तर तक फैलाव हो जाने के कारण योजनाओं को सरल भाषाओं में समझाने में सुगमता मिली है व आम नागरिक में विशेष चेतना आई है ।

राजीव गांधी स्वच्छता मिशन

स्वच्छता और स्वास्थ्य एक दुसरे से बहुत जुड़े हुये है । स्वच्छता न केवल व्यक्तिगत स्वच्छता तक सीमित है वरन इसमें गांव,बस्ती, नगर, कस्बा सबकी स्वच्छता सम्मिलित है । शुद्ध पेयजल, इसका समुचित रख रखाव, गंदे पानी की निकासी, भोजन व घर की स्वच्छता, पर्यावरण स्वच्छता, संक्रामक रोगों से बचाव, अच्छे स्वास्थ्य की जानकारी आदि ऐसे विषय है जिन्हे समग्र रूप में चर्चा कर निपटारा करना आवश्यक है । राजीव गांधी स्वच्छता मिशन इसी व्यापक उददेश्य को पूर्ति करने हेतु गठित किया गया है । जिससे जन साधारण के स्वास्थ्य में सुधार लाया जा सके है ।

शुद्ध पेयजल उपयोग से इस उददेश्य की आंशिक पूर्ति होती है । पूरे–पूरे लाभ के लिये स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत आवासीय क्षेत्रों के शौचालय का निर्माण, हर घर में सफाई अभियान, दूषित जल की निकासी, कचरे का प्रबंधन, जन साधारण की मनोवृत्ति में बदलाव तथा स्वास्थ्य शिक्षा का समन्वित क्रियान्वयन आवश्यक है।

मिशन के तहत् गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वालों के लिये निजी शौचालय बनाने के लिये ८० प्रतिशत की मदद शासन द्वारा दी जाती है, शेष २० प्रतिशत

हितग्राही को वहन करना पडती है । इसी तरह गांव में नालियों एवं अन्य स्वच्छता कार्य, सोखता पिट, जल मल विसर्जन कार्य के लिये ५० प्रतिशत मदद शासन द्वारा तथा ५० प्रतिशत ग्राम पंचायत द्वारा वहन करना पडता है ।

इस अभियान के व्यापक महत्व को देखते हुये और इसे गति देने के लिये महात्मा गांधी राज्य ग्रामीण विकास संस्थान जबलपुर में यूनीसेफ के माध्यम से एक स्वच्छता इकाई की स्थापना हो चुकी है । मिशन अन्तर्गत जिला स्तर पर जिलाध्यक्ष जबलपुर की अध्यक्षता में एक समिति गठित है जो इस स्वच्छता कार्यक्रम के व्यापक प्रचार प्रसार एवं जनजागरण के अभियान के कार्यक्रम तय करती है । अभियान के महत्वपूर्ण कार्यो का जन साधारण तक पहुचांने के लिये रूपरेखा बनाई गई है । जिले में अब स्वच्छता, स्वास्थ्य व शिक्षा को समग्र रूप में लिया जा रहा है ।

मिशन द्वारा विगत माहों में स्वच्छता व स्वास्थ्य पर संगोष्ठीयॉ, स्वच्छता मेले ,प्रदर्शनी, स्वच्छता पार्क व ग्रामीण आवश्यकताओं के अनुरूप नयी तकनीकों का विस्तार किया है जिसके अच्छे परिणाम सामने आ रहे है ।

नई उपलब्धियों का वर्ष -1995-96

० स्वच्छता इकाई का गठन :-

स्वच्छता कार्यक्रम के प्रचार प्रसार के लिये इस वर्ष महात्मा गांधी राज्य ग्रामीण विकास संस्थान जबलपुर में स्वच्छता इकाई की स्थापना हुई है । इस इकाई के माध्यम से संस्थान में होने वाले प्रशिक्षणों में अधिकारी एवं जनप्रतिनिधियों को स्वच्छता कार्यक्रम के बारे में जागरूकता लाने का प्रयास किया जा रहा है । देश में आज क्या २ नई तकनीकें आम समस्याओं के निवारण हेत उपलब्ध है । उनकों सरल भाषा में आम नागरिक तक पहुँचाया जा रहा है । इसका प्रमुख उद्‌देश्य यह है कि प्रशिक्षिण के दौरान लोगों को व्यक्तिगत तथा संस्थागत स्तर की विभिन्न स्वच्छता सुविधाओं की जानकारी दी जावे। इसके उत्साहवर्धन परिणाम मिले है । संस्थान में गत माह स्वच्छता पार्क भी बनाया जा चुका है जो अपने प्रकार का देश का पहला पार्क है । इसमें इन सभी तकनिकों के माडल प्रदर्शित किये गये है जिनकी वर्तमान संदर्भ में देहात में आवश्यकता है । इससे जिले के पंच सरपंच व पंचायती राज्य व्यवस्थाओं से जुड़े सभी तंत्र को बेहतर जानकारी हासिल हो रही है ।

० यूनीसेफ का सहयोग:-

यूनीसेफ द्वारा स्वच्छता कार्यक्रम को प्रभावशील रूप से लागू करने के लिए

महात्मा गांधी राज्य ग्रामीण विकास संस्थान जबलपुर में समय–समय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम पंच/सरपंच/जनपद अध्यक्ष/उपाध्यक्ष/स्वयं सेवी संस्थाओं, आंगनबाडी कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है । प्रशिक्षण उपरान्त इन जन प्रतिनिधियों द्वारा स्वच्छता बाबत् अपने क्षेत्र में जनजागरण एवं शिक्षण का कार्य किया जाता है ।

महात्मा गांधी राज्य ग्रामीण विकास संस्थान जबलपुर के प्रांगण में यूनिसेफ के सहयोग से एक अनूठे स्वच्छता सुविधाओं के प्रर्दशन स्थल का निर्माण किया गया है जो देश में अपने आप में विशेष स्थान रखता है । इस प्रदर्शन परिसर में विभिन्न प्रकार के निजी जलबंध शौचालय, सार्वजनिक शौचालय एवं मूत्रालयों अन्य स्वच्छता इकाईयों का प्रदर्शन किया गया है । सभी माडल वास्तविक आकार के बनाये गये है और उसके तकनिकी विवरण प्रदर्शित किये गये है ।
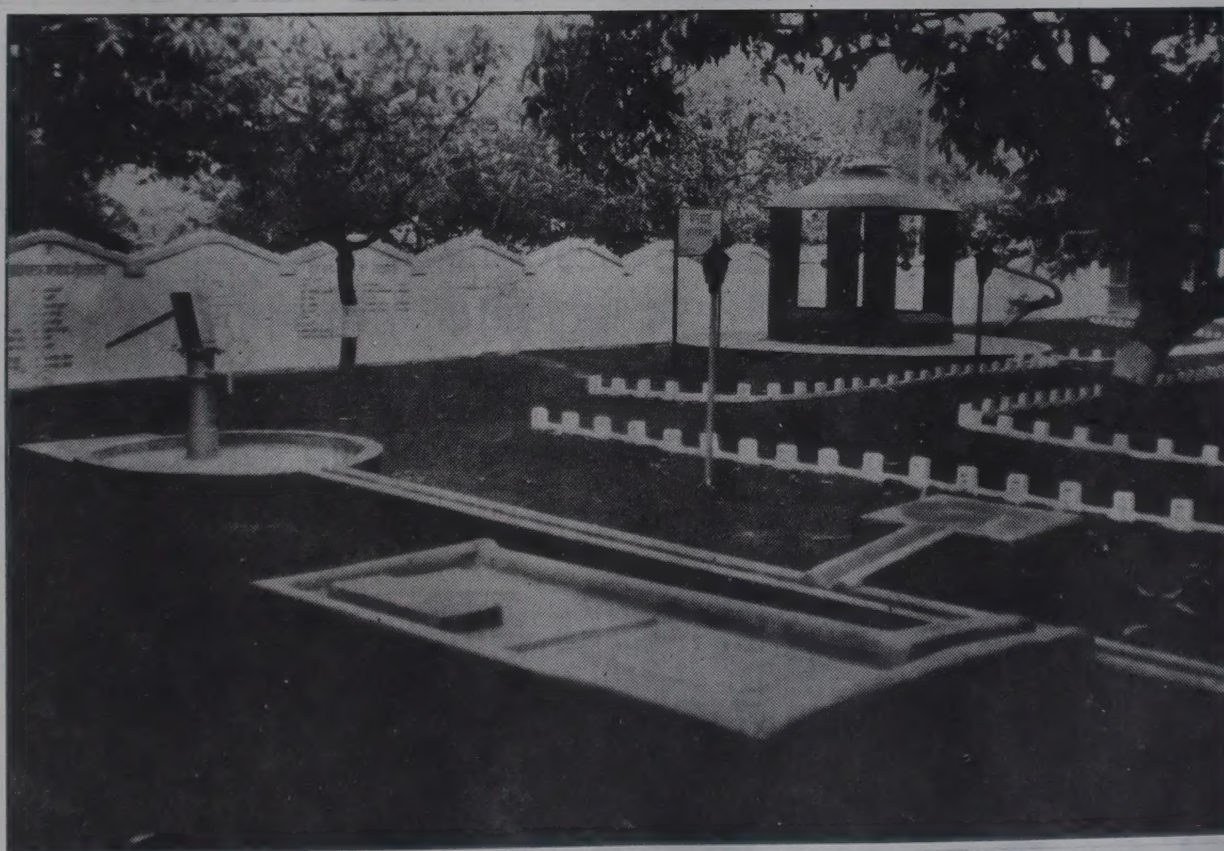
o शौचालय इकाईयों का व्यापक फैलाव

जबलपुर की विभिन्न ग्राम पंचायतों में ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष १९९५–९६ में बहुत ही उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है पंचायतो की सक्रिय भागीदारी से लक्ष्य से ड़ेढ गुनी उपलब्धी प्राप्त की है ।

शौचालय इकाई निर्माण	लक्ष्य	उपलब्धि
गरीबी रेखा सीमा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों हेतु	१४२५	२०१२
गरीबी रेखा के उपर वाले परिवारों हेतु	३५६	४६५
कुल	**१७८१**	**२४७७**

जबलपुर जिले में विगत वर्षो से अभी तक कुल ४२८७ शौचालय बनाए गये ।

० पंचायती राज संस्थाओं का प्रथम प्रशिक्षणः-

स्वच्छता कार्यक्रम जनभागीदारी के बिना सफल नही हो सकता । पंचायतो के चुने हुये प्रतिनिधियों को मिशन कार्यक्रम में जोड़ने हेतु स्थानीय पॉलीटेक्निक में ३ दिन का एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में श्रीमती प्रतिभा सिंह जिला पंचायत अध्यक्ष, जिले के विधायक, कुण्डम, शहपुरा एवं पनागर के जनपद अध्यक्ष,जनपद सदस्यों एवं सरपंचों ने भाग लिया । प्रशिक्षण में प्रशासन, यूनिसेफ, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय विभाग, राजीव गांधी राष्ट्रीय पेयजल मिशन के उच्च प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया । प्रशिक्षण में स्वच्छता, स्वच्छ पेयजल, हैण्ड़पम्प की मरम्मत, जन भागीदारी इत्यादि विषयों पर जानकारी दी गई। प्रदेश में जबलपुर ही एक ऐसा जिला है जिसमें सर्व प्रथम ऐसा प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के माध्यम से प्रत्येक ग्राम पंचायत से एक युवक का चयन कर हैण्डपम्प एवं नलजल योजनाओं रखरखाव के विभिन्न विकासखंड़ो में लगभग ६२४ प्रशिक्षाणार्थियों को भी प्रशिक्षित किया जा चुका है । इस अवसर पर हैण्डपंप रखरखाव संबंधी एक अत्यन्त उपयोगी पुस्तिका तैयार कर सभी प्रशिक्षार्थियों में वितरित की गई तथा उन्हें टूलकिट भी प्रदान किए गये ।

० देश का प्रथम स्वच्छता मेलाः-

विकासखण्ड पनागर के ग्राम उमरिया चौबे में १२ दिसम्बर १९९५ को स्वच्छता पर आधारित विषयों के लेकर ग्रामीण मेले का एक अनूठा आयोजन किया गया । इस स्वच्छता मेला में जिला पंचायत अध्यक्ष, सदस्य, जनपद अध्यक्ष/सदस्य, सरपंच, यूनीसेफ मध्यप्रदेश, बैंक एवं जिले के अधिकारियों ने भागीदारी की । इस मेला में निजी शौचालय, महिला बाल विकास आंगनबाड़ी स्वच्छता, पेयजल, साक्षरता, उर्जा विकास इत्यादि मुद्दों पर प्रदर्शनी लगाई गई । मेले में अनेक सरपंचो द्वारा अपने गांवों को संपूर्ण रूप से स्वच्छ बनाने का संकल्प भी लिया । अनेकों ग्रामवासियों द्वारा भी अपने निजी साधनों से व्यक्तिगत स्वच्छता के साधन अपनाने का संकल्प लिया ।

मेले में बच्चों द्वारा प्रभात फेरी, नुक्कड़ नाटक, कठपुतली कार्यक्रमों द्वारा भी सम्पूर्ण पनागर विकासखंड में स्वच्छता कार्यक्रम के प्रति जनता में उत्साह वृद्धि की । इस विकासखंड को सम्पूर्ण रूप से स्वच्छ विकास खण्ड बनाने का प्रयास किया जा रहा है ।

० बैंकों की सक्रिय भागीदारी

अभी तक बैकों को ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रमों में सीधे रूप में नही जोडा गया था शौचालय निर्माण व च्यक्तिगत स्वच्छता से जुड़े कार्यो हेतु बैक द्वारा ऋण उपलब्ध नही कराया जांता था। प्रदेश में पहली बार भारतीय स्टेट बैंक द्वारा स्वच्छता कार्यक्रम में गरीबी रेखा के उपर जीवन यापन करने वाले वर्ग के लिये निजी शौचालय निर्माण हेतु हितग्राहियों के ऋण प्रकरण स्वीकृत किये गये व इस प्रकार की योजना का प्रथम शुभारम्भ जबलपुर में हुआ। इससे जिले के सभी विकासखंडों में व नगरों मे उत्साह का संचार हुआ है ।

o सेनीटरी मार्ट इकाइयां

यूनीसेफ की सक्रिय भागीदारी के फलस्वरूप जिले में दो सेनेटरी मार्ट कुण्डम एवं पनागर में स्थापित किए जा चुके है । इन मार्टो में शौचालय निर्माण संबंधी सामग्री जैसे सीमेंट, पाईप, लेट्रिन सीट आदि उपलब्ध रहती है तथा शौचालय निर्माण के लिये प्रशिक्षित कारीगर भी उपलब्ध होते है । इनके माध्यम से निजी तथा संस्थागत शौचालयों का निर्माण कराया जा सकता है । सुविधा पर्यावरण समिति द्वारा कुण्डम में तथा सुरम्य फारमेशन द्वारा पनागर में सेनेटरी मार्ट चालू कर दिये गये है । जिले में निर्मित हो रहे इंदिरा आवास योजनाओं तथा ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रमों के शौचालय निर्माण में यह सेनीटरी मार्ट काफी लाभकारी सिद्ध हो रहे है क्योंकि इनमें सभी आवश्यक सामाग्री उपलब्ध रहती है । प्रत्येक मार्ट हेतु यूनिसेफ द्वारा ५० हजार का सुगम ऋण भी प्रदाय किया जाता है ।

○ प्रचार प्रसारः-

स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से जुडे विषयों पर ग्राम वासियों को सरल भाषा में जानकारी उप्ललब्ध कराने के लिये जिले में कठपुतली कार्यक्रम एवं नुक्कड नाटकों को व्यापक रूप में इस्तमाल किया गया है । इन कठपुतली नाटकों का विषय ग्रामीण स्वच्छता व स्वास्थ्य पर आधारित रहता है । इनके प्रति ग्रामों में काफी उत्साह देखा गया है । जिससे मिशन के कार्य को गति मिली है । जिले में विगत १२ माहों में १३० प्रदर्शन विभिन्न ग्रामों में किये जा चुके है ।
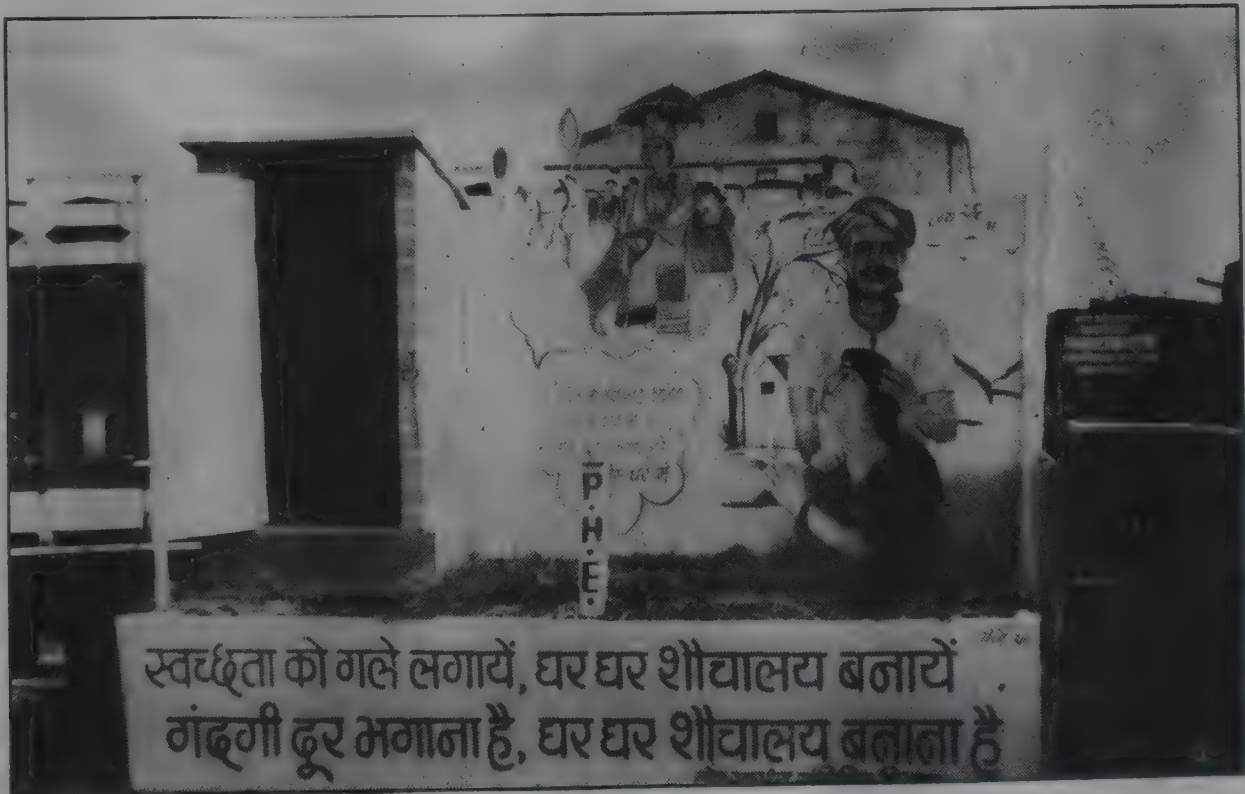
स्वस्थ ग्राम-एक नई दिशाः-

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा **वर्ष २००० तक सभी के लिये स्वास्थ्य** का लक्ष्य रखा गया है। प्रदेश में भी इसी अनुरूप स्वास्थ्य विभाग द्वारा कार्यवाही की जा रही है। जबलपुर जिले के सिहोरा विकासखण्ड के चार ग्रामों में इस लक्ष्य हेतु एक विषेश कार्य योजना बनाई गई है जिसे **स्वस्थ ग्राम** का नाम दिया गया है । यह चार ग्राम निम्न है ।

१. घाट सिमरिया
२ कछपुरा
३. जुझारी
४. दर्शनी

इस प्रयोग की मुख्य बातें निम्नानुसार है ।

(क) सभी के लिये स्वास्थ्य सन् २००० तक तभी संभव है, जब हर नागरिक अपने स्वास्थ्य के बारे में चिंतित हो, शासकीय अथवा प्रशासकीय अधिकारियों के प्रयास माात्र से यह संभव नहीं है।

(ख) उक्त प्रयोग का मूर्त रूप देने के लिये जन प्रतिनिधियों, पंच सरपंचों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है, और उनमें जन चेतना जाग्रत करना आवश्यक है ।

(ग) सिहोरा क्षेत्र के ग्रामों में सरपंचों द्वारा प्रत्येक ग्राम में १० पुरूष एवं १० महिला ग्रामीण स्वयंसेवी शिक्षित १० वी पास नवयुवकों को लिया है । उनको प्रशिक्षण देकर ग्रामीण स्वच्छता सफाई पोषण आदि के संबंध में जानकारी दी गई है ।

उपरोक्तनुसार इन ग्रामों में सर्वप्रथम यहां के चुने हुये जनप्रतिनिधियों, प्रबुद्ध ग्राम वासियों को स्वच्छता व स्वास्थ्य के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया । विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया गया कि सभी के लिये स्वास्थ्य तब ही संभव है जब हर नागरिक अपने स्वास्थ के सबंध मे सोचे समझे और उस दिशा में ठोस कार्यवाही करे । स्वास्थ शिक्षा की विशेष भूमिका को उजागर किया गंया। देहात में होने वाले प्रमुख रोगो से बचाव के उपाय, गर्भवती महिलाओं व बच्चों मे होने वाली बीमारियों को टीकाकरण के माध्यम से किस प्रकार बचा जा सकता है यह बताया गया । इन प्रत्येक गांव में १० पुरूष व १० महिलाओं को स्वयं सेवी आधार पर चुना गया । इन चयनित साक्षर नवयुवकों को अपने गांव के स्वास्थ की स्थिति रिर्पोट घर घर जाकर तैयार करने हेतु तैयार किया गया । इस रिर्पाट में टीकाकरण की स्थिति नेत्र रोगों की स्थिति, विकलांगता की स्थिति महिला एवं शिशु कल्याण, गर्भवास्था

महिलाओं की जानकारी आदि का सर्वेक्षण किया गया है । सर्वेक्षण पश्चात ग्रामसभा में इन नवयुवकों तथा स्वंय सेवी भाव के कार्यकर्ताओं द्वारा गांव की स्वास्थ रिर्पोट प्रस्तुत की जाती है । सर्वेक्षण अनुसार ग्राम वासियों उत्साह जाग्रत कर टीकाकरण, अंधत्व निवारण, महिला एवं शिशु कल्याण लक्ष्यों को सुगमता से प्राप्त किया जा सका है ।

पंचायती राज संस्थाओं की भागीदारी:-

(अ) महत्व:-

स्वच्छ पेयजल का सीधा संबंध इन सभी लोगो से है जो पानी का उपयोग करते है और पानी का भण्डारण/संरक्षण करते है । इन सभी की जिम्मेवारी पेयजल की स्वच्छता और सफाई सुनिश्चित करना है । यदि परिवार को दूषित पेयजल से होने वाले रोगों से फैलने वाली बीमारियों की जानकारी है तो वह अपने तथा अपने परिवारजनों को रोगों से बचा सकता है । आवासीय इलाको में मलमूत्र के निकास की समुचित व्यवस्था कर इससे फैलने वाली गंदगी से बचाव कर सकते है । गांव में स्वास्थ्य, और स्वच्छता की आदतें और बरताव में परिवर्तन लाने में पंचायतों की बहुत बड़ी भूमिका है ।

(ब) प्रशिक्षण:-

स्वच्छता को जीवन पद्धति का अंग बनाने के लिए यह आवश्यक है कि पर्यावरण साफ रखा जाये । स्वच्छता से ही स्वास्थ्य है, तथा वे एक दूसरे के पूरक है । रोगों के कारण प्रति वर्ष अनुमानतः १८० करोड कार्य घंटो का नुकसान होता है । उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि स्वच्छता एवं स्वस्थता कितनी जरूरी है । पंचायत राज में पदस्थ जनप्रतिनिधियों को समय समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे लोगों को स्वच्छता और स्वस्थता का महत्व समझा सकें।

जबलपुर जिलें में अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुए है । इसके द्वारा पंच सरपंचों को स्वच्छता व साफ पेयजल की उपयोगिता समझाई गयी । प्रशिक्षण के दौरान जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के माध्यम से सभी ६२४ ग्राम पंचायतों में हैण्डपंप मैकेनिक प्रशिक्षित किए गये । राजीव गांधी राष्ट्रीय पेयजल मिशन के माध्यम से १११ राजमिस्त्री कारीगर तथा १६४ हैण्ड़पंप मैकेनिक तथा जिला विकास अभिकरण के माध्यम से महिला हैण्डपंप मैकेनिकों को भी प्रशिक्षण दिया गया ।

(स) पंचायतों द्वारा हैण्डपंप संधारण

सत्ता के विकेन्द्रीकरण में जिला पंचायत, जनपद पंचायत तथा ग्राम पंचायतों को नये अधिकार व कर्तव्य सौंपे गये है । लोक स्वास्थ यांत्रिकी विभाग द्वारा गत वर्ष तक ग्रामीण क्षेत्रों में हैण्डपंपों का रखरखाव किया जाता था गांव दूर दराज तक फैले होने के कारण कई बार हैण्डपंप मैकेनिक समय से नही पहुॅच पाते थे । ग्रामीण क्षेत्रों मे हैण्डपंप का पानी सुरक्षित व प्रदुषण मुक्त रहता है तथा पीने व खाना पकाने की दृष्टि से उपयोगी रहता है । अब राज्य शासन द्वारा हैण्डपंपों की जिम्मेदारी भी पंचायतो को दी है। तथा इसके लिए आवश्यक आवंटन भी प्रदाय किया गया है। पहले ग्रामवासियों को जिन कार्यो के लिए जिला मुख्यालय में आना पडता था अब अधिकांश कार्यो का निपटारा ग्रामपंचायत स्तर में ही संभव है । हैण्डपंपों एवं नलजल योजनाओं का रख रखाव भी अब सरपंचों द्वारा किया जा रहा है । इस व्यवस्था से ग्रामीणों में हैण्डपंप के प्रति अपने पन की भावना जागी है।

(द) इंदिरा आवास योजनाः-

इंदिरा आवास योजना जवाहर रोजगार योजना की एक उपयोजना के रूप में क्रियान्वित की जा रही है । इस योजना में जवाहर रोजगार योजनांतर्गत राज्य के वार्षिक आवंटन की १० प्रतिशत राशि पृथक से निर्धारित की जाती है । योजनांतर्गत उपलब्ध राशि का ६० प्रतिशत अनुसूचित जाति/जनजाति/मुक्त बंधुआ मजदूर तथा ४० प्रतिशत सामान्य वर्ग के हितग्राहियों के आवास निर्माण हेतु उपयोग में लाई जावेगी । इस योजना के अन्तर्गत मकानों का कुर्सी क्षेत्र १७ से २० वर्ग मीटर होना चाहिए । वर्ष ९५–९६ से आवास निर्माण की राशि बढ़ाकर ११,००० कर दी है जिसमें रू. ९०००/– मकान निर्माण तथा २०००/– धुआं रहित चूल्हा तथा स्वच्छ शौचालय निर्माण हेतु निर्धारित है। अब इनमें स्वच्छ शौचालय भी निर्माण करना अनिवार्य है ।

इन आवासों के निर्माण से स्वच्छ और सुन्दर परिवेष बनते है । इन आवासों में धुआंरहित चूल्हा, शौचालय होने से स्वच्छता आती है । जिसका सीधा संबंध स्वास्थ्य से है। जिले में बड़े पैमाने पर गतवर्ष तथा इस वर्ष आवास कुटीर निर्मित किये जा रहे है।

(क) धूआं रहित चूल्हा

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अधिकांश महिलाएं चूल्हे पर ही खाना बनाती है । साधारण चूल्हे से निकलने वाले धुऐं से महिलाओं की ऑखों में कई बीमारियां जन्म लेती है । इसके साथ ही परम्परागत चूल्हों में जलाउ लकड़ी के उपयोग में उर्जा व्यर्थ भी जाती है । ग्रामीण क्षेत्रों में ईधन के साधनों की निरन्तर कमी होती जा रही है । ऐसे में नई तकनीकी के चूल्हें उर्जा की बचत तथा स्वास्थ की दृष्टी से काफी महत्व रखते है । ग्रामीण घरों में तथा शहरी गंदी बस्तीयों में वातावरण सुधारने में धुऑ रहित चुल्हों की बहुत बड़ी भूमिका है । इनका डिजाइन इस प्रकार बनाया गया है कि एक साथ दो सब्जियॉ पकाई जा सकती है व रोटी भी बनाई जा सकती। अतः बीमारियों से बचने के लिए उन्नत चूल्हे (धुआं रहित) भी सभी इंदिरा आवासों में लगाए जा रहे है । उन्नत चूल्हा कार्यक्रम में उठाउ चूल्हे भी उपयोग में लाये जा सकते है ।

(ख) स्वच्छता सेवा केन्द्र (सेनेटरी मार्ट)

सेनेटरी मार्ट एक प्रकार की दुकान है जिसमें स्वच्छ शौचालय बनाने के लिए डिजाइन, सामाग्री और तकनीकी सहायता मिलती है जैसे पेन, टैप, फुटरेस्ट, पाईप, दरवाजे खिडकियां, चौखट, सीमेंट, रेत, ईट, आदि । सेनेटरी मार्ट योजना यूनीसेफ व शासन की संयुक्त योजना है जिसका उद्देश्य स्वच्छता कार्यक्रम में लगने वाली महत्वपूर्ण सामाग्री ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध करना हैं । कम लागत से बनने वाले स्वच्छ शौचालय के लिए लगने वाले सभी समान यहां से मिल सकते है और इसको बनाने के लिए प्रशिक्षित मिस्त्री की जानकारी भी मिलती है । इस प्रकार सेनेटरी मार्ट एक सर्विस सेन्टर के रूप में कार्य करता है । सेनेटरी मार्ट अशासकीय संस्था या डवाकरा समूह द्वारा चलाया जा सकता है । इसे शुरू करने के लिए इच्छुक संस्था स्वयं अपने साधनों का भी इस्तेमाल कर सकती है। इस योजना का क्रियान्वयन लोक स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रदेश में किया जा रहा है । यूनीसेफ द्वारा भी इसके लिए सहायता दी जाती है ।
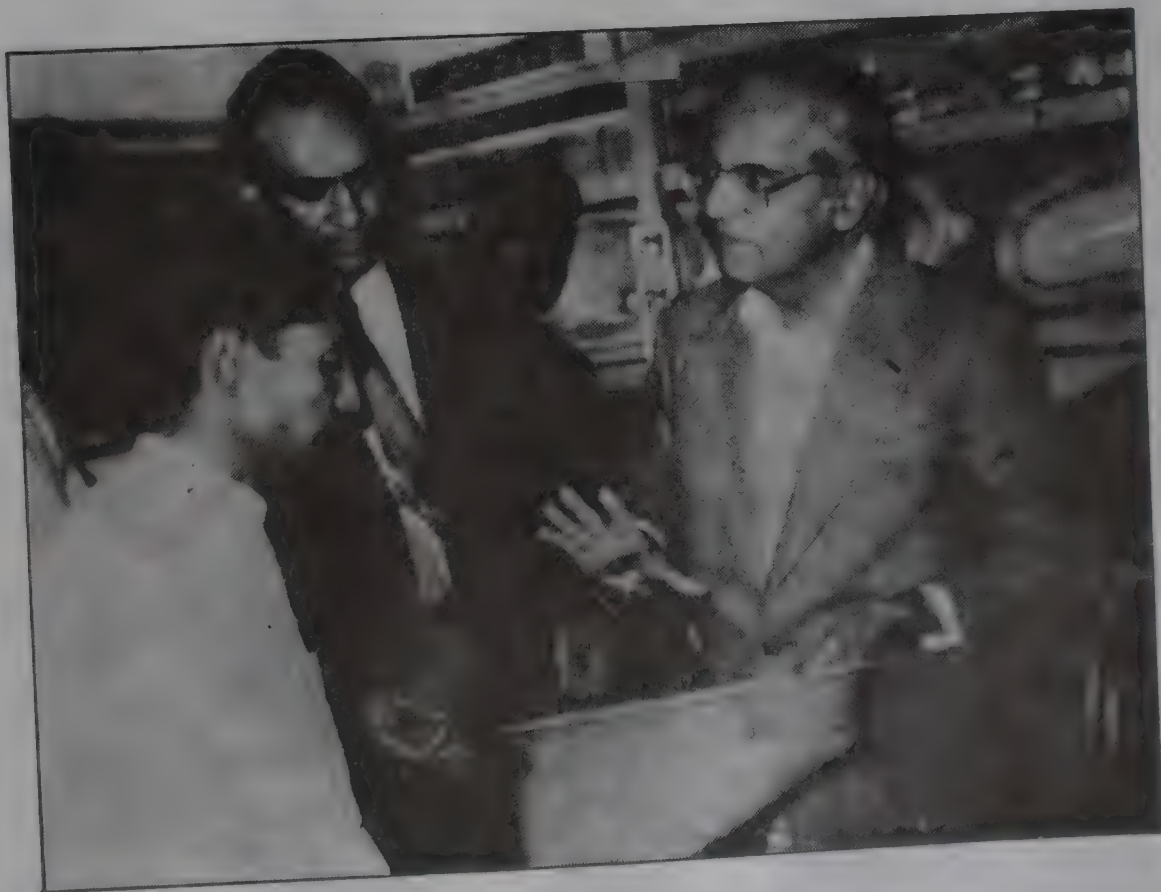
...माचार पत्रों की नजर में...

...छता के प्रति ग्रामीणों का उत्साह जागा

...पुर, १२ दिसंबर। ग्रामीण ... कार्यक्रम के अंतर्गत गांव के ...

नल जल योजना का शिलान्यास

धनपुरी, (उमरिया कुडारी). विगत दिवस ग्राम बीजापुरी नल-जल योजना का शिलान्यास क्षेत्रीय विधायक श्री नन्हेलाल धुर्वे मुख्य ... के द्वारा जनपद अध्यक्ष ... की अध्यक्षता ...

नल जल योजना का शिलान्यास 12/3/96

जलसंकट के निवारण हेतु 66 लाख की योजना

... नगर निगम की स्थायी समिति की ... कल्याणी पाण्डेय की अध्यक्षता ... में कई महत्वपूर्ण निर्णय ...

योजना के अंतर्गत कैलाश स्कूल के पास सामुदायिक भवन निर्माण, रानी दुर्गावती वार्ड के ...

...गर विकासखंड के ...रपंचों का प्रशिक्षण

...जबलपुर। महात्मा गांधी राज्य ... ग्रामीण विकास संस्थान ... में आज पनागर ...

नर्मदा योजना के तृतीय चरण का उद्घाटन राज्यपाल करेंगे

सितम्बर १९९५

...पों के रखरखाव हेतु राशि वितरि...

८ अगस्त ... ग्रामीण ... हेण्डपम्पों के रखरखाव ... पंचायतों के माध्यम से ...

सुपुर्द किये गये ६५४ हेण्डपम्पों के संधारण हेतु ६५ हजार ६७० रुपये. पनागर को ८०७ हेण्ड पम्पों हेतु ३१ ...

पेयजल एवं स्वच्छता से ग्रामीणों को जो...

राजीव गांधी राष्ट्रीय पेयजल मिशन की संगोष्ठी

...र पेयजल हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में अभि...

सुधारने टैक्नीशियन का प्रशिक्षण देना आदि प्रमुख है। यह परियोजना जबलपुर के कुण्डम एवं शहपुरा ब्लाकों में लागू की जा रही है। इसके अंतर्गत गरीबी रेखा के नीचे आने वाले परिवारों के शौचालय बनवाए जायेंगे जिसमें २० प्रतिशत ग्रामीण जन देंगे बाकी लागत केन्द्र व राज्य सरकार अदा करेगी व हैण्डपंपों के मिस्त्री भी गांवों से ही बनेंगे। २५ लोगों का एक बैंक रहेगा जिसमें ग्राम सरपंच, जिला पंचायत एवं अन्य समितियों के सहयोग से चयन कर प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसी परिप्रेक्ष्य में आज ८ अगस्त में तीनों ब्लाकों के सरपंचों की एक संगोष्ठी आयोजित की गई है जिसमें इस ...

जानकारियां प्रदान की जायेंगी। परियोजना को लागू करने के लिये एक समिति बनाई गयी ... जिसमें जिलाधीश अध्यक्ष होंगे तथा ... एवं तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान के अन्य पदाधिकारी इसके सदस्य होंगे। आयोजित एक पत्र वार्ता में श्री वी.के. जैन, आर.के. अग्रवाल एवं जिलाधीश एम.एम. उपाध्याय ने बताया कि इस संगोष्ठी में श्रीमती प्रतिभासिंह जिला पंचायत अध्यक्ष, कमिश्नर श्री सुब्रतो बैनर्जी सहित अनेक विभागों के विशेषज्ञ मौजूद रहेंगे।

बताया गया कि तीनों ब्लाकों के सभी गांवों में एक वर्ष के अन्दर ही पेयजल आपूर्ति तथा हैण्डपंप मिस्त्री तैयारी हो ...

जायें व मल नष्टीकर शौचालय बनवा ... परियोजना के लिये ... से आर्थिक अनुदा... योजना ५ वर्ष की ... इस योजना के परि... देश के अन्य भागों ... ग्रामीणों को ...

ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम

कुण्डम - पनाग...

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण के परियोजना अधिकारी टी. धर्माराव से प्राप्त एक जानकारी के अनुसार ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम के तहत ग्रामीणों को गांव के निकट ही शौचालयों के निर्माण ... सामग्री और प्रशिक्षित कारीगरों की ... दृष्टिकोण से ...

जबलपुर, ... कुण्डम और प... लिए यूनिसेफ ... इनमें सुविध... कुण्डम में त... विकासखंड ...

उमरिया चौबे में ...

छात्राओं ने वि...

स्वच्छता से ही गांवों का कायाकल्प संभव

जबलपुर। ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत गांवों को स्वच्छ, सुन्दर एवं साफ-सुथरा बनाने तथा ग्रामीणों में निजी स्वच्छता के प्रति नई चेतना जागृत करने के उद्देश्य से जिले के विकासखड पनागर ग्राम पंचायत उमरिया चौबे में ग्रामीण स्वच्छता मेले का आयोजन लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से किया गया। स्वच्छता मेला कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती ... सिंह ने की। कलेक्टर मदन मोहन ... कार्यक्रम में मुख्य अतिथि तथा ... कलेक्टर टी. धर्माराव कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। इस मौके पर गांव के ... परिवारों के घरों में निजी शौचालय ... जिसमें गरीबी ... बाहर खुले में शौच ... की

इस अवसर पर आपने ग्रामीण महिलाओं को आगे आकर कार्यक्रम को सफल बनाने ... लेने का आव्हान किया तथा ... जिले ...

विकासखंड अधिकारी श्री पांडे, स्वास्थ्य अधिकारी डा. जैन ने ग्रामीणों को विभागीय जानकारी दी। इस अवसर पर सरपंच दीनदयाल पटेल जिला पंचायत सदस्य श्रीमती रजनी यादव तथा महिला पंच श्रीमती जानकी बाई ने भी मेले को संबोधित किया।

... में ... पंचायत ... वारियों के ... अतिरिक्त ... फ के साथ ... दवरी धनपुरी, ... के हैण्डपंपों के ... ण किया गया ... योग्य पाया गया ... को भी दी गई.

...ड़ी मजदूरों की ...

100 नलकूपों के लिए 2 करोड़ 47 लाख स्वीकृत

सिहोरा. राज्य शासन ने जबलपुर ... विकासखण्ड सिहोरा एवं मझौली विकास... में निर्माणाधीन 100 शासकीय नलकूपों के ... 2 करोड़ 47 लाख 68 हजार रुपये की पुनरी... स्वीकृति प्रदान कर दी है। ...

उपरान्त ... को लेकर प्रदेश ... पाटिल ...

नर्मदा योजना का तृतीय चरण

इसी माह शुरू हो जायेंगे प्रस्तावित कार्य

जबलपुर. नगर की महत्वाकांक्षी नर्मदा ... पेयजल योजना का चरणबद्ध क्रियान्वयन हो ... महापौर सुश्री कल्याणी पाण्डेय ... नर्मदा योजना के तृतीय ... प्रस्तावित कार्यों ...

...यूब वैल खनन ...लाख स्वीकृत

...संसाधन कार्यक्रम के ... आधारताल में ... विकास ...

जिला श... परियोजना अधिकारी ... अनुसार नलकूप खनन हेतु ... से सामुदायिक इकाई अधारताल ... में 46 हजार रुपये की लागत से सामान्य ट्यूब... खनन, चौधरी मोहल्ला दुर्गा मंदिर के पास कंचनपुर ... में 80 हजार 500 रुपये की लागत से ग्रेवल पैक्ड ट्यूब वैल का खनन तथा निर्भय नगर में एक लाख 98 हजार रुपये की लागत से पावर पम्प ... ट्यूब वैल खनन हेतु स्वीकृति किये ... मरा... आदि उपस्थित

ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम

लक्ष्य से दुगने शौचालय निर्मित

...ला। ग्रामीण ... त जबलपुर में ... जिला ... कार्यपालन यंत्री से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रदेश में ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम को जन आन्दोलन का रूप देने के ... सामान्य हितग्राहियों के लिये बनाये गये हैं। यह समस्त कार्य स्वयं हितग्राहियों द्वारा अथवा कार्यरत पांच स्वयं सेवी ... द्वारा किया गया।

...रू हो। ... क्षेत्रीय प्रबंधक दामोदर श... के भागीदारी सुनिश्चित ... स किया जा रहा है।

स्वास्थ्य मेले में महिला स्मृद्धि ... हत गांव की सभी ४७५ महि... खोले गए, १२ निराश्रितों के ... १८ के सामाजिक सुरक्षा पेंशन, ... ग्रामीणों को आवासीय भूमि के पट्टे भी ... शिविर में कार्यपालन यंत्री ल... महित ...

दैनिक भास्कर दिनांक 9.5.95

...स्वच्छता केन्द्र स्वीकृत

...स्वच्छता कार्यक्रम के तहत जिले के ... स्वच्छता सेवा केंद्र स्थापित करने के ... स्वच्छता सेवा केंद्र को स्वीकृति प्रदान कर दी है ... समितियों को स्वीकृति प्रदान कर दी है। ... विकासखंड ... सोहलपुर जबलपुर ... पुर द्वारा ... सोसायटी हनुमा... सेवा केंद्र स्थापि...

बीमारियों से ... सेवा केंद्र ...

संभाग में 6703 शौचालय बनेंगे

जबलपुर. ग्रामीण ... तहत गरीबी ... वालों के लिये शौचालयों का निर्माण ... रहा है. वर्ष 95-96 में प्रदेश भर ... शौचालय बनेंगे जिसमें से 670... जबलपुर संभाग में बनेंगे.

इसमें से जबलपुर जिले में 1425, नरसिंहपुर में 1613, बालाघाट में 838, मण्डला में 969, सिवनी में 1000, छिंदवाड़ा ... 858 शौचालय ...

ढाई हजार शौचालयों का निर्माण

जबलपुर। राजीव गांधी स्वच्छता मिशन के अंतर्गत जबलपुर जिले के 13 विकास खण्डों में ... हजार 562 शौचालय निर्मित किये गये ... सार्वजनिक ...

छात्राएं उत्कृष्ट जनसहयोग या शाला, गांव अथवा आसपास के परिवेश में स्वच्छता व स्वास्थ्य के प्रति अच्छा उत्साह प्रदर्शित करते हैं. कलेक्टर ने बताया कि जबलपुर में सेनेटरी पार्क विकसित हो ... है तथा इसमें दर्शित गतिविधियों तथा ...

म.प्र. में सफाई अभियान छेड़ेगा राजीव गाँधी स्वच्छता मिशन

भोपाल, वा. मध्य प्रदेश में आम लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाने के लिए राजीव गांधी स्वच्छता मिशन की स्थापना की गई है. ... के संरक्षित निबटान, शरीर, घर और मोहल्ले की सफाई, सुरक्षित खाद्य पदार्थों के उपयोग, गंदे पानी की सुरक्षित निकासी और गंदगी के सुरक्षित ...

व्यापक कार्यक्रम

मिशन के उद्देश्यों में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की आबादी, विशेषतः गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करने वाले परिवारों के लिये स्वच्छता सुविधाओं को तीव्र गति से सुलभ कराने का कार्य शामिल किया गया है, स्वच्छता और स्वास्थ्य शिक्षा के बारे में जनजागरूकता का निर्माण और स्वच्छ शौचालयों की मांग को सजित करने, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विद्यमान सभी शौचालयों को शुष्क शौचालयों में परिवर्तित कर सिर पर मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करने, महिलाओं ... शौचालय और नहाने को पूर्ण सुविधायुक्त स्वच्छता परिसरों के निर्माण को ...

करने और स्वच्छता सामग्री आदि ... सुनिश्चित करने के कार्य भी मिशन ... जायेंगे.

स्वच्छता मिशन के लिये ... यांत्रिकी विभाग को नोडल विभाग ... जिला स्तर पर जिला स्वच्छता स... की जायेंगी जो मिशन की ग... संचालन, क्रियान्वयन और निगरा... करेंगी. लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी ... कार्यपालन यंत्री इस समिति के स... समिति में पंचायतों, ... संस्थाओं और विशेषज्ञों ... जायेगा. यह समिति जिला साक्षरता ...

...मेला-९५ का समापन

...कार्यक्रम पेश किये

(ग) नई तकनीकों का ग्रामीण क्षेत्रों में फैलाव

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता मिशन को व्यापक रूप देने के लिये आधुनिक तकनीकों के फैलाव के लिये विभिन्न कार्य प्रारंभ किये गये है । संबंधित निम्न कार्यक्रम चलाये जा रहे है ।

१. दो गड्ढों वाला शौचालय :- यह अन्य शौचालय की तुलना में सस्ता, स्थायी व टिकाउ होता है, जिसके कारण भूमिगत अथवा सतही जल दूषित नही होता । इसमें बनने वाली गैस भूमी व्दारा ही सोख ली जाती है । इसे स्थानीय निर्माण सामाग्री द्वारा निर्मित किया जा सकता है । एवं अन्य प्रकार के शौचालयों के मुकाबले अपेक्षाकृत कम भूमि पर निर्मित किया जा सकता है । एक शौचालय सामान्य परिवार की आवश्यकता की ५–६ वर्ष तक पूर्ति कर सकता है तथा बाद में शुष्क मल की निकासी खाद के रूप में की जा सकती है । बहुत थोड़े से पानी में मल की निकासी हो जाती है ।

यह शौचालय शहरों की फ्लस लेट्रीन जैसा ही होता है और इसमें शौच को एक गड्डे मे पानी से बहा दिया जाता है । इसके लिये आधी बाल्टि पानी लगता है । बंद गड्डे में जो पानी जमा रहता है उसके कारण बदबू नही फैलती और मख्खियॉ नहीं उडती। इसका रखरखाव सरल है । एक शौचालय में दो गड्डे रहते है । तथा प्रत्येक गड्डे की चौडाई तथा गहराई १ मीटर होती है । एक गड्डे का उपयोग ३ साल तक हो सकता है। इस शौचालय को बनाने के लिये जगह का चयन ऐसा हो की भूमि समतल हो और आस पास पानी का कुऑ आदि ना हो । इस इकाई का ले आउट नीचे अंकित है ।

यह आवश्यक है कि शौचालय को साफ रखा जाये इसके लिये

(१) किसी डिटरजेंट का उपयोग करते हुये झाडू से शौचालय को साफ करना चाहिये ।

(२) पत्थर, कूडा करकट इसमें ना फेंके ।

(३) इसकी टूट फूट तुरन्त सुधारें ।

२. हैण्डपंप यूनिटः- गांव में शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने हेतु हैण्डपंप लगाये जाते है । इनसे कम लागत में शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराया जाता है । इसमें जमीन के भीतर से पानी आता है । इसके चारों ओर पक्का चबूतरा बना देने से और बेकार जल के निकास की व्यवस्था कर देने से यह साधन सबसे सुरक्षित है । हैण्डपंप से पानी लेने से पहले बर्तन को पहले अंदर व बाहर से अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिये ।

मानव मल से प्रदूषित पानी के कारण दस्त, हैजा, टाइफाइड, पीलिया तथा आंव जैसी कई बीमारियॉ हो सकती है । नदी, तालाब के आस पास जब लोग मल त्याग करते है तो पानी प्रदूषित हो जाता है और मल में मौजूद रोगाणु पानी में मिल जाते है। जब लोग स्नान करते है, कपडे धोते है या पशुओं को नहलाते है तब ये रोगाणु फैल सकते है और जब ऐसा पानी पीने के लिये अथवा पकाने के लिये उपयोग किया जाता है तो ये रोगाणु शरीर में प्रवेश कर जाते है । कई बार लोग यह नही जानते की स्वच्छ दिखने वाले पानी में भी ऐसे रोगाणु हो सकते है । जो सामान्यतः दिखाई नही देते इसलिये हमें केवल सुरक्षित स्रोत हैण्डपंप का ही उपयोग करना चाहिये । अतः हैण्डपंप के आस पास सफाई रखना आवश्यक है ।

यदि पानी खुले स्रोत से लिया जाये तो पानी को उबालकर शुद्ध कर लेना चाहिये। पानी को उबालने के बाद साफ बर्तन में ढककर रखना चाहिये।

३. **पशु नांद**:- सफाई के दृष्टिकोण से जिस प्रकार मानवमल के निष्पादन हेतु शौचालयों का होना आवश्यक है, उसी भांति पशुओं द्वारा किये गये गोबर तथा मल का भी सही प्रकार निष्पादन करना आवश्यक है । यह भी आवश्यक है कि पशुओं को स्वस्थ रखने के लिये उन्हें साफ सुथरा पानी पिलाया जाये । पशु नांद में एक पशु के लिये ४.५ x१०.५ जगह लगती है । चित्र में स्पष्ट है कि मलमूत्र आदि का निष्पादन एक नाली के द्वारा सोखता गड्डे में किया जाता है । इसकी अनुमानित लागत ३३०० रू. आती है ।

४. **संस्थागत यूनिट**:- अधिकांश पाठशालाओं में शौचालय एवं मूत्रालय अभाव है । इसके लिए एक यूनिट जिसमें एक शौचालय और दो मूत्रालय बालक, बालिकाओं के लिए अलग अलग डिजाइन बनाया गया है । इसका उपयोग शालाओं में किया जा सकता है । इसकी निर्माण लागत लगभग ७,०००/– रू. आती है ।

(घ) स्वच्छता स्वस्थ जीवन की प्रमुख कड़ी

सभी के लिए स्वास्थ्य बहुत आवश्यक है । ८० प्रतिशत बीमारियां अस्वच्छता के कारण होती है । दूषित जल के कारण लाखों व्यक्ति हैजा, पेचिश, अतिसार, आंत्रशोध, मोतीझिरा, पीलिया तथा पोलियो रोग का शिकार हो जाते है । एक अनुमान के अनुसार मात्र दस्त रोग से भारत ७ लाख बच्चे हर वर्ष मौत का शिकार हो जाते है । म.प्र. में दस्त रोग से हर वर्ष ५०–६० हजार बच्चे मौत की गोद में समा जाते है । देश की जनसंख्या सन् २,००० में १०० करोड़ तक पहुँच जाने की संभावना होगी । इस शाताब्दी के अंत तक विश्व व्यापी मापदण्डों के अनुरूप "सबको स्वास्थ्य" एवं कम से कम २५ प्रतिशत परिवारों को स्वच्छता सुविधाएं उपलब्ध कराने का संकल्प लिया है ।
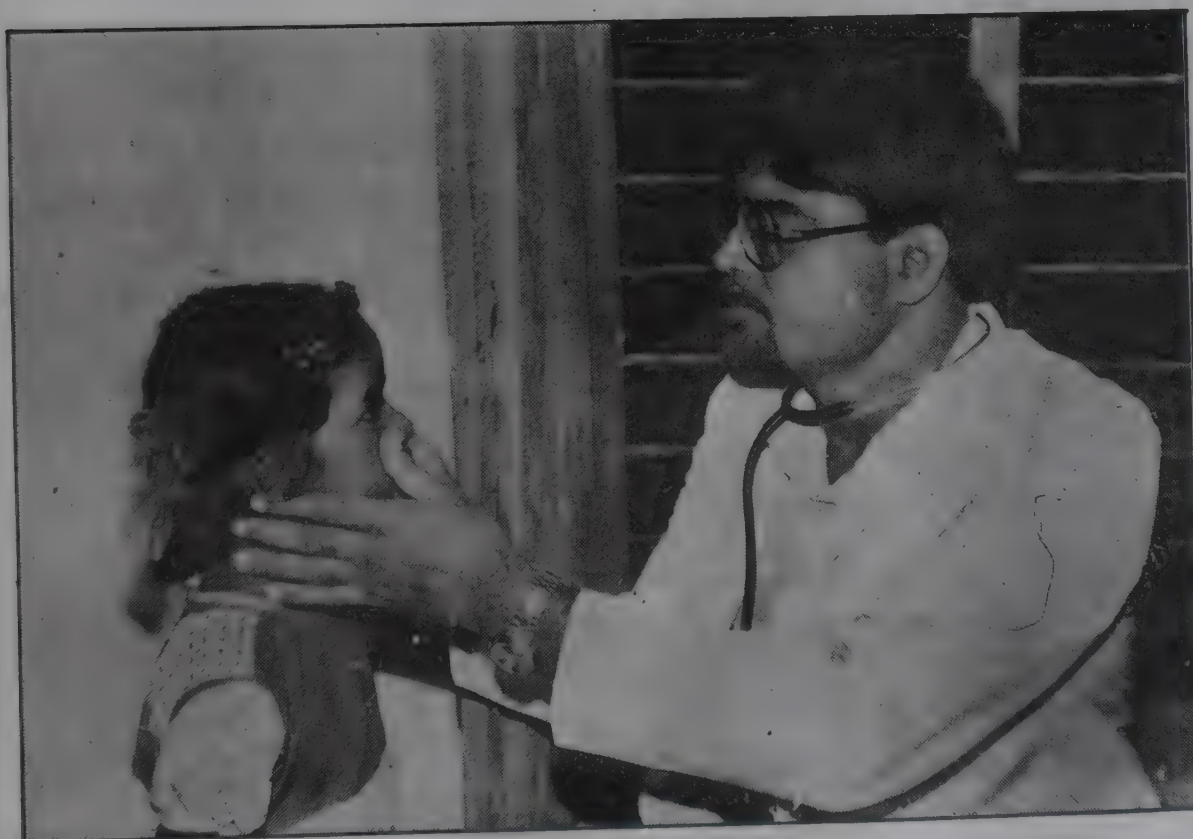
इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य निम्नानुसार है:–

१. ग्रामीण क्षेत्रों में शुद्ध पेयजल की उपलब्धता के साथ स्वच्छता सुविधाओं का विस्तार कर गंदगी की स्थिति और पानी से होने वाली बीमारियों से बचना है ।

२. प्रशिक्षणों एवं कार्य शालाओं के माध्यम से कार्यक्रम से जुड़े अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, जन प्रतिनिधियों में उन्नत तकनिकी क्षमता का विकास कर कार्यक्रम का सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित करना ।

३. मुख्य रूप से महिलाओं की इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में सहभागिता सुनिश्चित करना।

४. स्वयं सेवी संस्थाओं, शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से स्वच्छता शिक्षा का प्रचार कर स्वच्छता इकाईयों के निर्माण एवं उपयोग के लिए ग्रामीण समुदाय को प्रेरित करना ।

५. ग्राम पंचायतों में प्रशिक्षण दिया जाये कि :–

- स्वच्छता के लिये घर हवादार हो और आमतौर पर घर साफ रखें ।
- पका हुआ खाना ढक कर भोजनदानी में रखा जाना चाहिये ।
- घर में धुऑं रहित चूल्हे का उपयोग किया जाये ।
- परिवार के लोग बर्तन साफ करने, नहाने हाथ धोने के लिए साबुन/राख का प्रयोग करें। मिट्टी का उपयोग कदापि न करें । विशेष रूप से शौच जाने के बाद तथा भोजन से पहले हाथों को साबुन से अच्छी तरह धोना आवश्यक है ।

शहरी बस्तियों का बदलता स्वरूप :-

(अ) मूलभूत सेवा संस्थान कार्यक्रम

जबलपुर शहर में यह योजना वर्ष ९०–९१ से प्रारंभ है । यू.बी.एस.पी. योजना का मुख्य कार्य शहरी गरीबों के लिए मूलभूत सेवा उपलब्ध करना है । कार्यक्रम में क्षेत्रीय निवासियों की सामुदायिक भागीदारी को केन्द्रीय मूत एकीकृत सेवाएं उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम के उद्देश्य में शहरी निर्धन विशेषकर अत्यधिक कमजोर वर्ग उपक्षित महिलाओं तथा बच्चों के जीवन सुधार एवं उनके जीवन यापन स्तर को उंचा उठाना निहित है । यू.बी.एस.पी. कार्यक्रम निम्नलिखित ६ मार्गदर्शी सिद्धातों के आधार पर कार्य संचालन किया जा रहा है ।

१. सामुदायिक सहयोग
२. विभिन्न परियोजनाओं का लाभ निर्धनों के हित में केन्द्रीय भूत करना ।
३. शिशु व मातृत्व पर विशेष ध्यान देना ।
४. प्रभावोत्पादक लागत
५. विस्तार
६. निरंतरता

जबलपुर जिले में ६ सामुदायिक परियोजनाओं के माध्यम से चुनी हुई गंदी बस्तीयों में यह योजना चलाई जा रही है । प्रत्येक २५ घरों के समूह में एक महिला कार्यकर्ता को चयनित किया गया है । तथा प्रत्येक इकाई में १०० महिलाओं की समिति भी गठित की गई है । समिति के अध्यक्ष का चयन निर्वाचन द्वारा किया जाता है । अपने अपने क्षेत्र मे ये समितियॉ स्वच्छता, पर्यावरण सुधार, टीकाकरण, गर्भवती महिलाओं की जानकारियॉ तथा उनकी देख रेख, सामुदायिक स्वच्छता, शौचालय निर्माण, धुऑ रहित चूल्हो का निर्माण नाली निर्माण आदि विभिन्न गतिविधियॉ देखती है । समय समय पर शिशु मेला तथा चिकित्सा जॉच कार्यक्रम आयोजित किये जाते है । विकास समिति द्वारा हर माहं बैठक का आयोजन किया जाता है । जिसमें बस्ती के विकास से संबंधित विभिन्न मुददों पर चर्चा की जाती है । तथा निराकरण के उपाय सोचे जाते है । विकास योजनाओं के क्रियान्वयन का उत्तरदायित्तव सहायक परि. अधिकारी तथा रेजिडेट कम्युनिटी कार्यकर्ता (आर.सी.बी.) का होता है । अब क्षेत्र में होने वाले स्वच्छता तथा रोग निवारण कार्यक्रमों की प्राथमिकताऍ भी यह समिति निर्धारित करती है । इसके लिये इन्हे पृथक से आवंटन भी दिया जाता है।

(ब) महिला प्रशिक्षण

शहरीय गन्दी बस्ती के क्षेत्रों की समस्याओं को देखते हुये जबलपुर नगर में स्थित महाविद्यालयों से शहरीय गन्दी बस्ती क्षेत्रों में १० दिवसीय शिवरों के आयोजन के पहल की तथा शिविर आयोजित कराये । नगरीय क्षेत्रों में आयोजित ये शिविर अपने उद्देश्यों में सफल रहे है । जबलपुर प्रदेश का पहला जिला है जहां पर इस प्रकार के शिविर आयोजित किये गये है । अभी तक ६५–६६ में राष्ट्रीय सेवा योजना के २ शिविर पोलीपाथर तथा रांझी में आयोजित किये गये है । इन शिविरों में छात्रों द्वारा स्वास्थ्य शिक्षा, साक्षरता स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागृत किया, तथा स्थानीय नागरिको की विविध समस्याओं का सर्वेक्षण कर स्थानीय आवश्यकताओं का पता लगाया। इन सर्वे में प्राप्त जानकारियों के आधार पर परियोजना द्वारा आगे कार्यवाही की जा रही है ।

(स) समाधान शिविर

जबलपुर जिले में समाधान शिविरों का अनूठा प्रयोग किया गया इसके अन्तर्गत शिविर का आयोजन १५ दिवस पूर्व आवेदन पत्र क्षेत्रीय कार्यालयों में आमंत्रित किये जाते है । प्राप्त आवेदन पत्रों को संबंधित विभागों को दिये जाकर समस्याओं का निदान प्राप्त कर आयोजित शिविरों में संबंधित व्यक्ति को सूचना दी जाती है । शिविर के दिन प्राप्त आवेदन पत्रों पर भी कार्यवाही की जाती है । इन दो दिवसीय समाधान शिविरों में स्वास्थ्य विभाग, मलेरिया विभाग, कुष्ठ उन्मूलन समिति, पंचायत व समाज कल्याण विभाग, राजस्व विभाग, रोजगार विभाग, अल्प बचत, विधिक सहायता, महिला एवं बाल विकास विभाग, राजीव गांधी मिशन, ऊर्जा विकास निगम, नगर निगम जबलपुर, खाद्य एवं पोषण आहार बोर्ड, श्रम कल्याण विभाग, आदिम जाति कल्याण विभाग, एफ.पी.ए.आई, अंत्यावासायी सहकारी विकास समिति, म.प्र. नागरिक आपूर्ति खाद्य विभाग, शिक्षा विभाग तथा नगरीय कल्याण विभागों के अधिकारी स्थल पर उपस्थित रहकर जन समस्याओं का निकारण करते है । अभी तक आयोजित शिविर के माध्यम से विभिन्न विभागों द्वारा क्रियान्वित की जा रही कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी संपर्क सूत्र आवेदन करने की विधि, पात्रता आदि की जानकारी भी विभागों के आपसी समन्वय से जन समस्याओं का निराकरण किया गया है । जबलपुर जिले के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में आयोजित इन समाधान शिविरों की सराहना राष्ट्रीय स्तर पर की गई है ।

(द) स्वस्थ शिशु-स्वस्थ माता एवं शिशु मेला

म.प्र. में महिलाओं और बच्चों की स्थिती जो विकास के विभिन्न मापदंड से संबंधित आकडो से उभरती है वह अन्य राज्यों से काफी पिछडी हुई है । पुरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या लगातार कम होती जा रही है । १९८१ में एक हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या ९४१ थी वही संख्या १९९१ में ९३२ रह गई है । प्रदेश में शिशु मृत्यु दर अधिक है । भारत में प्रति हजार जीवन जन्म पर यह दर ७६ है जबकि प्रदेश में १०४ है । मातृ मृत्यु दर प्रति लाख प्रसव पर ६०० है जबकि पूरे भारत में यह दर ४०० है । यह आकडे स्पष्ट रूप से बताते है कि प्रदेश में महिलाओं और बच्चों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार की काफी गुंजाइश है । अधिक बच्चे होने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि बाल्यावस्था में ही बच्चों की विभिन्न रोगों से मृत्यु हो जाती है । बाल्यावस्था के प्रमुख रोगों को स्वच्छ पर्यावरण, स्वच्छ पेयजल व मुख्य जीवन रक्षक टीके लगाकर बालक को सुरक्षित किया जा सकता है । सामुदायिक इकाईयों में माताओं को इन बिन्दुओं पर जानकारी दी जाती है।

वात्सल्य योजना

ग्रामीण क्षेत्रों में गर्भवती महिलाओं के लिये संचालित की जा रही है । इस योजना के तहत् भूमिहीन परिवारों की महिलाओं को रू.५००/– अनुदान देकर सुरक्षित संस्थागत प्रसव के लिये प्रात्साहित करना, ताकि शिशु व मातृ दर में कमी लाई जा सके। योजना का संचालन जिला स्तर पर महिला एवं बाल विकास अधिकारी द्वारा किया जावेगा।

पल्स पोलियो कार्यक्रम

सन् २००० तक भारत को पोलियो से मुक्त किया जाना है । इसी तारतम्य में ९ दिसम्बर ९५ व २० जनवरी ९६ को तीन माह से तीन वर्ष तक के समस्त बच्चों को पूरे देश में एक साथ निकटतम मतदान केन्द्र में पोलियो दवा पिलाने की व्यवस्था की गई। बच्चों को बुखार, अतिसार के समय भी दवा अनिवार्य रूप से पिलायें । इसका प्रचार प्रसार जन प्रतिनिधि एवं ग्राम पंचायतों के माध्यम से किया गया। इसके उत्साहजनक परिणाम आये और जिले में पहिले बार राष्ट्रीयस्तर के इस कार्यक्रम को जनजागृण व जनभागीदारी

जोड़ते हुये अमल किया गया । सभी स्थानीय संस्थाओं, पंचायतों, जनपदों व जिला पंचायत स्तर से इस कार्यक्रम में सक्रियता से भागीदारी के कारण जिलें ने लक्ष्य से कही ज्यादा उपलब्धि हासिल की । **यह प्रदेश के अग्रणी जिलों में रहा ।**

(इ) बेहतर समन्वय आई.सी.डी.एस./यू.बी.एस.पी. का अभिनय प्रयोग

यह योजना बच्चों एवं महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिये भारत शासन के सहयोग से प्रारंभ की गई है । इस योजना का उद्देश्य ६ वर्ष तक के बच्चों को समुचित पूरक पोषण आहार प्रदाय कर स्वास्थ्य की स्थिति का सुधार करना है । कमजोर वर्ग की गर्भवती एवं शिशुवत माताओं को आंगनबाडी के माध्यम से लाभान्वित करना है । इसके लिए समन्वित रूप से निम्न सेवाएं इन परियोजना के जरिये दी जाती है ।

१. पूरक पोषण आहार
२. स्वास्थ्य जांच
३. प्राथमिक स्वास्थ्य की देखभाल/परामर्श सेवाएं
४. टीकाकरण
५. पोषण तथा स्वास्थ्य शिक्षा
६. स्कूल पूर्व अनौपचारिक शिक्षा

एक यू.बी.एस.पी. इकाई का गठन २००० से २५०० परिवारों से मिलकर होता है । प्रत्येक २० से २५ परिवारों में एक प्रतिनिधि का चुनाव किया जाता है । जिसे समुदायिक स्वंय सेवक रजिडेन्ट कम्यूनिटी वर्कर के नाम से जाना जाता है । यू.बी.एस.पी. योजना

के अंतर्गत ऐसी महत्वपूर्ण गतिविधियों का संचालन किया जाता है । जिससे की अन्य विभागों द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का सही लाभ गंदी बस्ती में रहने वाले लोगों को मिल सके, इस हेतु विभिन्न विभागों से सहयोग लिया जाता है । सामुदायिक विकास समिति की सलाह से विभिन्न गतिविधियों के संचालन का प्रयास किया जाता है । ताकि निर्धन वर्ग की जनता को उसका लाभ मिल सके । इसके लिये निम्न गतिविधियां संचालित की जा रही है ।

१. टीकाकरण
२. स्वास्थ्य परीक्षण
३. स्वास्थ्य शिक्षा
४. स्कूल पूर्व शिक्षा
५. अनौपचारिक शिक्षा
६. प्रौढ़ शिक्षा
७. सामुदायिक स्वच्छता
८. वृद्धों एवं अपंगों को सहायता
९. बाल अपराधी व नशामुक्ति हेतु कार्य
१०. बेरोजगारों को सहायता
११. खेलकूद व सांस्कृतिक कार्यक्रम
१२. जन चेतना को प्रोत्साहन
१३. पर्यावरण सुधार

उपसंहार

राज्य शासन ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र और वर्ग लोगों के विकास के लिये अनेक कल्याणकारी योजनाऐं कार्यक्रम बनाये है । शासन का उद्देश्य है कि इनक माध यम से कमजोर और पिछडे वर्ग का उत्थान हो ताकि वे एक बेहतर जीवन जी सके। परन्तु यह अक्सर देखा जाता है कि योजनाओं की जानकारी न होने के कारण लोग इसका लाभ नही ले पाते।

जबलपुर जिले के लिये इस स्वच्छता मिशन कार्यक्रम मार्गदर्शिका के माध्यम से ग्राम व बस्ती तक स्वच्छता व बेहतर स्वास्थ का संदेश घर–घर तक पहॅुचाने का लक्ष्य रखा गया है । आगे आने वाले दिनों में चुनी हुई संस्थाओं के समन्वित प्रयास से इस कार्यक्रम को एक लोक अभियन के रूप में परिवर्तित किया जायेगा । सभी के लिये स्वास्थ्य सन् २००० तक हमारा एक वृहत लक्ष्य है इसे हम अवश्य प्राप्त करेगें ।

सफाई क्या है

बहुत से लोग ऐसा मानते है कि साफ सफाई का मतलब है शौचालय का साफ सुथरा होना । ऐसा मानना ठीक नहीं है । इस बात में कोई शक नहीं कि खुले पड़े मानव मल से डायरिया जैसी बीमारियां फैलती है । लेकिन इस तरह की बीमारियों की रोकथाम के लिये केवल शौचालय का इस्तेमाल ही काफी नहीं है । घर और मोहल्ले की साफ सफाई का संबंध लोगो की आदतों और उनके सोचने के तरीके से भी होता है । यहां साफ सफाई का मतलब है बीमारियों को दूर रखने के लिये किये जा रहे सफाई के उपाय यहां "साफ सफाई " का मतलब मोहल्ले के वातावरण घर की सफाई और आदमी की साफ सफाई की आदतों से है ।
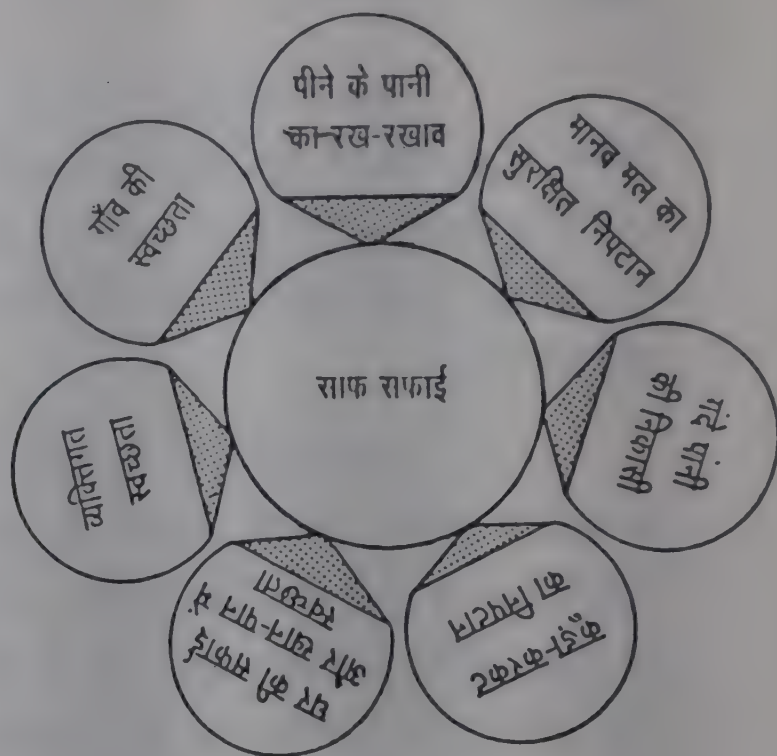
- तालाब, बावड़ी और पोखरों वगैरह में क्लोरीन डालना चाहिये।
- पीने का पानी यदि हैण्डपंप से न लिया गया हो तो उसे उबालकर पीना चाहिये।
- पानी को दोहरे किये मोटे कपड़े से छान कर पीना चाहिये ।
- क्लोरीन नाम की दवाई से पीने के पानी को साफ करना चाहिए ।

इन तरीकों का इस्तेमाल कर नारू की बीमारी से छुटकारा पाया जा सकता है

धूल और मिट्टी में न खेलें:-

जिस जगह पर लोग शौच–पेशाब करते है उसके आसपास बच्चों को कभी न खेलने दें बच्चों और बड़ों सभी को समझाएँ कि चप्पलें जरूर पहनें। ताकि अंकुश कृमि तथा गोलकृमि के रोगों से बचा जा सके।

दातों की सफाई जरूरी

हर रोज सबेरे और सोने से पहले दांतो को जरूर साफ करें । इसके लिये यदि कोई बेहतर चीज हासिल न हो तो नीम की दातौन करें ऐसा करने से दॉत सड़ते नही और बदबू नहीं आती ।

सीलबंद शौचालय बनाने का तरीका:

इसके लिये सही जगह का चुनाव जरूरी है। इसे ढलान या गड्डे में नही होना चाहिए । पानी की जगह से कम से कम दस मीटर दूर होना चाहिए, ताकि पानी पर खराब असर न पड़े। यदि उस जगह में जमीन के अन्दर के पानी की सतह गड्डे जितनी हो तो दूरी बढ़ाकर पन्द्रह फीट कर देनी चाहिए । यदि जमीन की बनावट ऐसी हो कि दरारों से पानी बहे तो सही जगह के लिए इंजीनियर से सलाह लेनी चाहिए ।
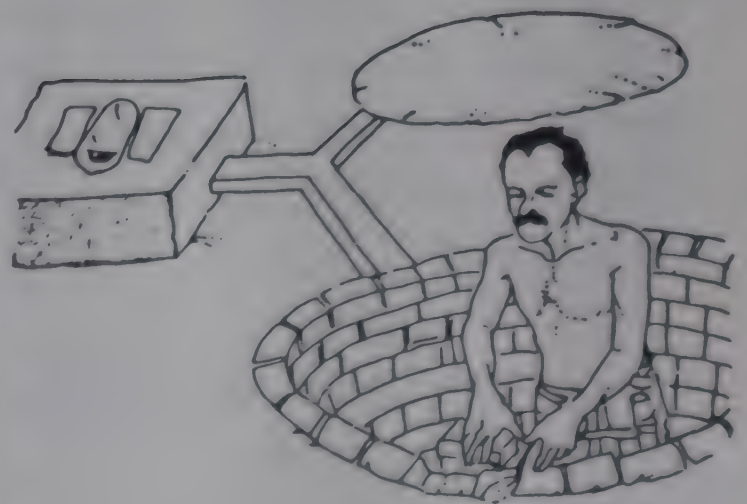
शौचालय साफ रखनाः

(१) डिटरजेंट का प्रयोग करते हुये झाडू से शौचालय को साफ करना चाहिए ।

(२) पत्थर, कूड़ा करकट या फालतू ठोस चीजें इसमें न फेके ।

(३) इसकी टूट–फूट तुरंत सुधारें ।

सोखता गड्डा कैसे बनाएँ

सोख्ता गड्डा ऐसा गड्डा है जो घरेलू स्तर पर ३.३''x ३.३'' साइज का जो पत्थरों या ईट के टुकड़ों से भरा होता है । इससे गड्डे के चारों ओर की दीवारें धसक नहीं पाती। इस तरह यहां का पानी धीरे–धीरे जमीन के अन्दर चला जाता है । न तो इस पानी की बदबू बाहर आती है और न ही इससे दूसरा कोई नुकसान होता है । अगर गड्डे में पानी भर जाए तो इसका पानी बाहर निकाल देना चाहिए । फिर गड्डे के पत्थरों को सुखा कर इसका उपयोग किया जा सकता है ।

o शौच जाने के लिये शौचालय का ही उपयोग करना चाहिए । बच्चे की टट्टी तुरन्त और निश्चित रूप से शौचालय में डालनी चाहिए या गाड़ देना चाहिए। बच्चे की टट्टी बड़ों की टट्टी से ज्यादा खतरनाक होती है। यदि शौचालय न होने के कारण खुले में मल त्याग कराना पड़े तो मल को मिट्टी से ढ़क देना चाहिए ।

o कीटाणुओं से बचने के लिये भोजन और पीने के पानी को ढ़क कर रखें ।

o संभव हो तो खाना खाने के समय ही भोजन अच्छी पकांए क्योकि पका कर रख देने से उसमें कीटाणु प्रवेश कर जाते है। (यदि पहले से पका हुआ खाना लेना पड़े तो उसे अच्छी तरह गरम करके ही खाएं।)

o शौच जाने के तुरन्त बाद, और खाना तैयार करने और खाने से पहले हाथ साबुन से धो लें। बच्चों को दूध पिलाने के पहले भी हाथ साबुन या राख से धो लेने चाहिए ।

o खसरे से गंभीर रूप से दस्त लग जाते है। यदि बच्चे को खसरे को टीका लगा दिया जाए, तो खसरे की वजह से दस्त नही लगेंगे। साधारण दस्तों से बचने का कोई टीका नही होता ।

दस्त लगने से बच्चे के शरीर से बहुत अधिक पानी निकल जाता है । इसलिए यह जरूरी है कि दस्त लगने पर बच्चे को पेय पदार्थ काफी मात्रा में दिये जायें। ये पीने की चीजें घर मे ही बन सकती है ।

दस्त से निकलने वाले पानी की भरपाई के लिये निम्नलिखित पेय पदार्थ घर पर ही बनाए और दिये जा सकते :–

ओ.आर.एस. का घोल (यह आमतौर पर दवाई की दुकानों और स्वारथ्य केन्द्रो में मिलता है)

o दाल का पानी चावल की मांड छाछ लस्सी या शिकंजवी
o मां का दूध पीने वाले बच्चों को दस्त के दौरान भी दूध देते रहना चाहिए । यदि कुछ न मिले तो सबसे ज्यादा साफ जगह से पानी लेकर बच्चे को दे दें ।

जलबंध शौचालय का ले आउट
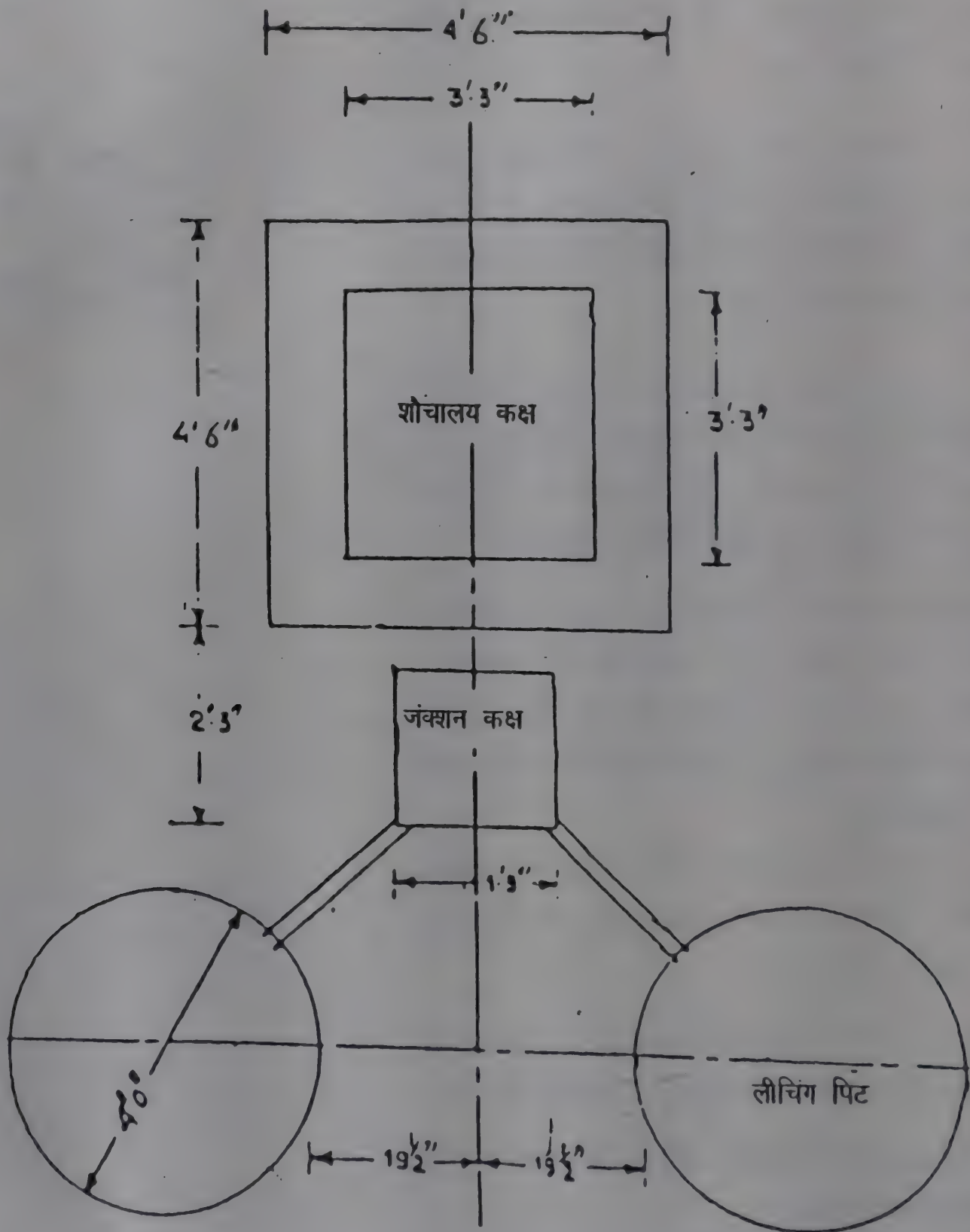
जलबंध शौचालय के अंग
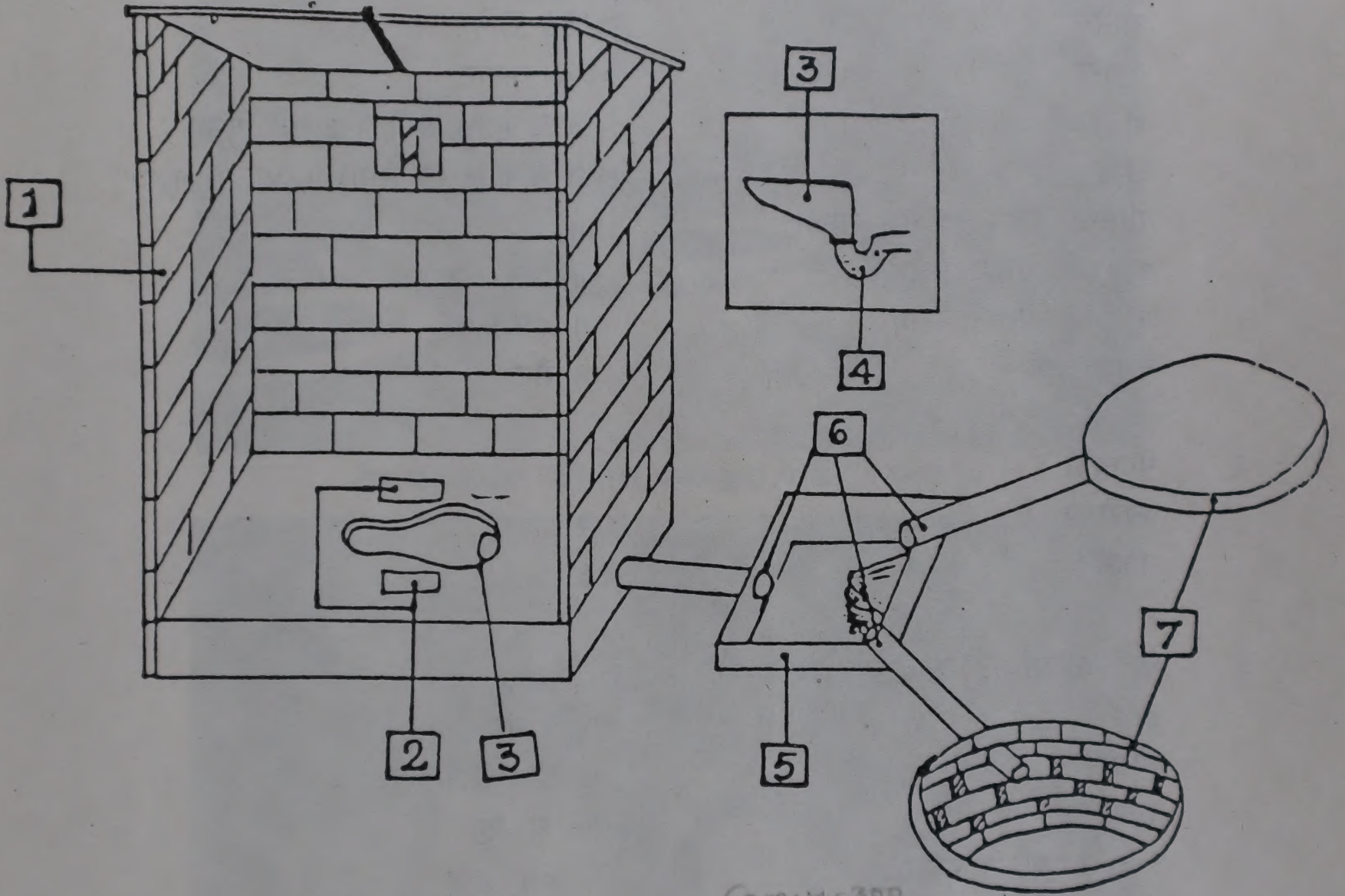
१. ऊपरी ढांचा
२. पांवदान
३. पेन
४. ट्रैप
५. जंक्शन कक्ष
६. कनेक्टिंग पाइप
७. लींचिग पिट

कुल लागत रू. २,७००/-

शौचालय निर्माण सामग्री

१.	भवन कुर्सी तक (सब–स्ट्रक्चर)	
	ईट	५०० नग
	सीमेन्ट	डेढ थैले
	बजरी	१० घ.फुट
	रोडी	३ घ.फु.(४ सेमी १ ३/४'' गेज)
	रोडी	२ घ.फु.(६–१ सेमी) १/४'' से १/२''
	सीमेन्ट पाइप ३'' मय साकेट	१०
	१ १/२'' पत्थर स्लैब	४' x ४' x २'
	१ १/२ पत्थर स्लैब	१' x १' x १'
	पेन व ट्रैप	१ सैट
२.	मजदूरी	
	कारीगर	२
	मजदूर	३
३.	छत की ऊंचाई तक(सुपर स्ट्रक्चर)	
	ईटें	५०० नग
	सीमेन्ट	१ १/२ थैले
	बजरी	१० घ. फु.
	१ १/२'' पत्थर स्लैब	२' x ५' x २'
	५' x २' दरवाजा मय फिंटिंग	१
	मजदूरी	
	कारीगर	१
	मजदूर	१

नोट : १. पत्थर उपलब्ध होने पर चुनाई पत्थर से करें ।

२. सीमेन्ट के स्थान पर चूना उपयोग किया जा सकता है ।

देश का प्रथम "ग्रामीण स्वच्छता पार्क", जबलपुर
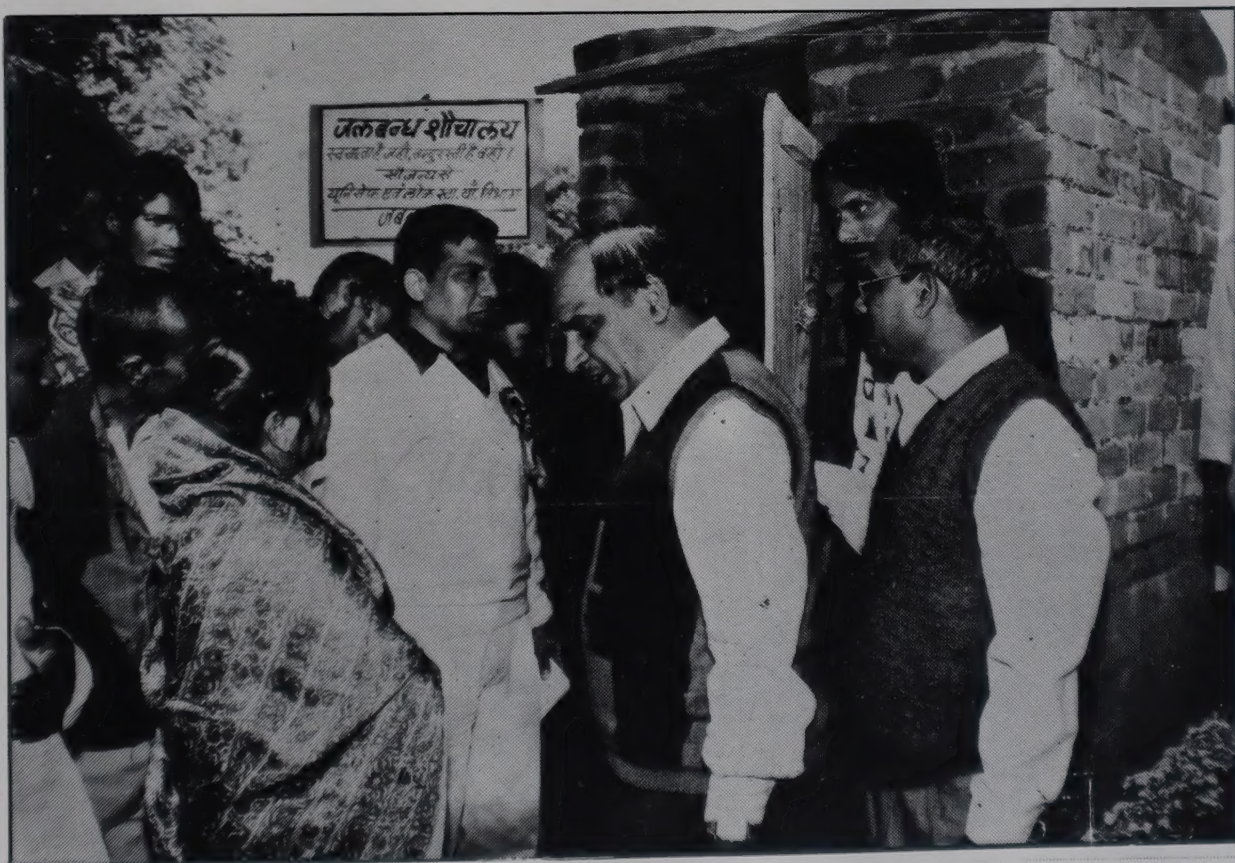
प्रदेश का प्रथम "स्वच्छता मेला" ग्राम- उमरिया चौबे, विकासखंड पनागर

जहां दिखेगा गंदा गांव ।
वहीं पड़ेगा रोग का पांव ॥

स्वच्छता को गले लगायें ।
घर घर शौचालय बनायें ॥

पियो पानी छान के ।
जियो जिंदगी शान से ॥

गूंजे घर-घर में यह नारा ।
स्वच्छ रहेगा गांव हमारा ॥